भक्त हृदय के उद्‌गार

संसार की चाहना जाती नहीं,
तेरी तड़पन मुझको आती नहीं।

कहो राम मैं क्या करूँ,
कुछ भी तो समझ आती नहीं।।

तेरा नाम तो निस दिन गाती हूँ,
तेरे द्वार पे भी मैं आती हूँ।

पर खाली हाथ मैं आती हूँ,
और खाली हाथ ही जाती हूँ।।

जब जब प्रसाद नहीं पाती हूँ,
तो तुझको दोष लगाती हूँ।

पर अपनी ओर मैं देखूँ न,
क्या नाहक तुझे सताती हूँ।।

चंचल मन मेरा माने न,
पर इसको लेकर आती हूँ।

राम तू इसको राह पर ला,
बस इसी आस से आती हूँ।।

- परम पूज्य माँ
प्रार्थना शास्त्र 1/73
12.07.1959

अनुक्रमणिका

1. **साधकगण के लिए प्रार्थना..**
   संसार की चाहना जाती नहीं..

3. ***कण कण में पल पल साधना!***
   डॉ. जे.के. महता

7. **परम में जाये परम भये, अज्ञान मल जब धुल जाये..!**
   मुण्डकोपनिषद्, द्वितीय मुण्डक 2/9

12. **आपने जैसा औरों को दिया है, वैसा ही आपको मिल जायेगा!**
    अर्पणा प्रकाशन - श्रीमद्भगवद्गीता - 'भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' 3/14-17

18. **मान, अपमान व भय से**
    किस कदर शून्य कर देते हैं आप!
    श्रीमती पम्मी महता

20. **स्तुति गान**
    सुश्री छोटे माँ

24. **मन्मना भव**
    परम पूज्य माँ से पिताजी के प्रश्नोत्तर

30. **तू जानती है तेरी अपनी कमाई कुछ भी नहीं, जो तू दे सके..**
    श्रीमती पम्मी महता

33. **तन कर्म करे चित्त राम मग्न**
    प्रस्तुति - विष्णु प्रिया महता

36. **गृहस्थ आश्रम प्रवेश**

37. **अर्पणा समाचार पत्र**

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविन्द से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनीबद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल,
132 037, हरियाणा भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल 132 037 01, हरियाणा द्वारा मार्च 2025 को प्रकाशित

कण कण में पल पल साधना

डॉ. जे.के. महता

जीव वैसा है, जैसा उसका मन

तन तो केवल एक यन्त्र है जिस राही जीव मन के द्वारा जग में विचरता है। कोई भी जीव वैसा ही है जैसा उसका मन। यदि मन में क्रोध भरा है तो वह क्रोधी कहलाता है, लोभ भरा है तो लोभी, गुमान भरा है तो गुमानी और इसी प्रकार यदि सेवा और प्रेम के सात्त्विक गुण भरे हैं तो वह साधु कहलाता है। इस वृत्ति पुंज मन का आधार है अहंकार। यह 'मैं' ही है जो एक तन के तदरूप होकर 'यह तन ही मैं हूँ' ऐसा मान रहा है।

जग में अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों को प्राप्त हुआ जीव अपने आन्तर में उनकी यादों को जमा करता जाता है। जब भी कोई नई परिस्थिति आती है, जीव की यादें ही उसकी मान्यता बन कर उस परिस्थिति को देखती हैं। इसी कारण हम वास्तव में नहीं जान सकते कि कोई भी परिस्थिति कैसी है, उसकी सत्यता क्या है? हम हर परिस्थिति पर अपनी मान्यता आरोपित करके उसे देखते हैं और उसे ही सत्य मानते हैं। इसी कारण एक ही परिस्थिति दो इन्सानों को अलग अलग रंग वाली दीखती है। अज्ञानता के कारण हम अपनी इस भूल को जान ही नहीं सकते और अपने झूठ को भी सत्य मानते रहते हैं। दूसरी ओर परिस्थिति की सत्यता को भी झूठ ही सिद्ध करते रहते हैं। इस प्रकार जीवन में पुण्य पाप करते हुए हम कर्मबीज बनाते रहते हैं और जन्म मरण के चक्र में पड़े रहते हैं।

पावनता की विधि- निष्काम कर्म, दान और तप

परम पूज्य माँ के सम्पर्क में आने से पहले शास्त्रों के निरन्तर अध्ययन और अनेकों संतो के सम्पर्क और आशीर्वाद को पाकर मन का ज्ञान तो मेरे पास था और वृत्ति निरोध ही साधना है, मैं यह भी जानता था, परन्तु मेरे आन्तर में भी कोई भूल है और मैंने भी अपनी वृत्तियों का निरोध करना है, यह न तो मैं जानता था और न ही मानता था। मैं तो अपने आपको एक उच्च कोटि का साधक, भक्त और ज्ञानी मानता था।

पूज्य माँ ने वर्षों ख़ुद दूसरों के तदरूप होकर प्रेम भरे निष्काम कर्म करते हुए मुझसे भी निष्काम कर्म करवाये। हमारे निष्काम कर्मों में अहंकार कहाँ हमें राहों में ही लूट लेता है, मुझे तो यह दीखता भी नहीं था। पूज्य माँ, मेरे सदगुरु, तारनहार ही मेरी साधना के संरक्षक बन कर इसे दर्शाते रहे और मिटाते रहे। आज देख रहा हूँ, यही तो गीता कथित पावनकर दान और तप का अभ्यास है, जो मेरे सदगुरु ने बहुत बरस मुझसे करवाया।

साधक की कृतज्ञता

आज मैं अपने अनुभव से यह कह रहा हूँ कि हर सत पथिक के लिये निष्काम सेवा अनिवार्य है। उसके राही अहंकार का मिटाव और मानवता के गुणों का उपार्जन ही उसका वास्तविक प्रयोजन है। साधक की हर सेवा में कृतज्ञता का भाव भरा होता है। वह जानता है कि जिसने उसे सेवा का मौका दिया है, वह श्रेष्ठ है।

यह उसकी कृपा है कि निष्काम सेवा राही वह साधक को यह मौका दे रहा है ताकि साधक अपने इस अहंकार रूपा 'मैं' के भाव से उठ जाये और चित्त की पावनता राही एक बेहतर इन्सान बन सके। वह इन्सान वास्तव में उस पर कृपा कर रहा है, इस कारण साधक उसका आभारी है।

शास्त्र वाक् ही सत्य है

आज परम पूज्य माँ का अर्पणा के इस छोटे से कुल के राही शास्त्रों को जीवन में उतारने के लिये समूचे जग को प्रसाद रूप में यही संदेश है। सम्पूर्ण समाज का और हक़ीक़त में मानव जाति का उद्धार भी इसी में है। यही वह शाश्वत धर्म है जिससे संसार का हर धर्म सहमत है।

अपने अपने धर्म और मान्यता का अलग अलग डंका बजाने वाले और धर्म के नाम पर हिंसक वृत्ति रखने वाले तो वास्तव में धर्म के नाम पर अधर्म का ही प्रचार करते हैं। आज ऐसा लगता है कि आज के युग में जहाँ हमारे मूल्य तेज़ी से नीचे गिर रहे हैं, अर्पणा की विस्तृत समाज की सेवाओं के द्वारा अर्पणा कुल के सदस्यों में मूल्यों का परिवर्तन परम पूज्य माँ का पूर्ण विश्व को एक संदेश है कि शास्त्र वाक् ही सत्य है। मूल्यों का जीवन में अनुसरण करने से ही मानव अपने में मानवता के गुण उपार्जित कर सकता है। जीवन में सत्य का प्रमाण ही शास्त्र की सत्यता को सिद्ध करता है। इस नाते सब धर्म एक ही हैं।

शास्त्र आदेश है, उपदेश नहीं

परम के आराधक के लिये, चाहे वह किसी भी धर्म का हो, उसके मूल् शास्त्र के आदेश का पालन करते हुए दीर्घकाल तक उसका अभ्यास अनिवार्य है। इस राही ही वह सुख और तृप्ति को पाता है। पूज्य माँ ने सदा कहा है कि सुखी ही साधना कर सकता है। वह साधना क्या है, यह भी तो हर धर्म के शास्त्र में ही दर्शाया गया है और उस धर्म के आदि पुरुष के द्वारा जीवन में प्रमाणित किया गया है।

अर्पणा परिवार का यह सौभाग्य है कि शास्त्रों की प्रतिमा पूज्य स्वयं हमारे पथ प्रदर्शक और पथ पर चलने वालों की शक्ति स्वरूप हमारे मध्य में हमारे साथ हैं। शारीरिक स्वास्थ्य और शक्ति अति क्षीण होने पर भी सत पथिक को राह पर चलाने के लिये उनका ध्यान कभी भी अपने तन पर नहीं गया। उनकी अपनी कथनी के अनुसार उनके रक्त की एक एक बूंद इस तन के रचयिता भगवान के चरणों में अर्पित है। जिसने उन्हें जिस भाव में पुकार लिया, माँ अपने तन को भूल कर उसके भाव के तदरूप हो गए। उसके लिये ही उनका जीवन अर्पित है। शायद यही उनके जीवन का भगवान द्वारा निर्माण किया हुआ प्रयोजन है।

साधक का दृष्टिकोण और अभ्यास

साधक पहले दान और तप रूपा निष्काम कर्म के अभ्यास रूप भगवद् तत्व को समझता है। इसको ही भगवान ने गीता में 'कर्म जम बुद्धि' कहा है। तत्पश्चात् वह अपने चित्त में काम और अहंकार की वृत्तियों को स्पष्ट देख सकता है, चाहे वे बीज रूप में ही वहाँ पड़ी हों। वह जानता है यही आवरण हैं, जो आज भी उसके हृदय में प्रकाशित परम तत्व पर अज्ञान का बादल बन कर छाया हुआ है। यदि इसका नितान्त निरोध न हुआ तो यह पुनः उसे पतन की ओर ले जायेगा। भगवान ने गीता में कहा है-

'आब्रह्मभुवनाल्लोका पुनरावर्तिनोऽर्जुन।'

॥8/16॥

अर्थात् : *हे अर्जुन! ब्रह्मलोक तक, सब लोकों से साधक वापिस आ सकता है।*

ऐसी चेतावनी सुन कर साधक और भी तड़प जाता है। वह भगवान से निरन्तर प्रार्थना करता हैः

'मेरी अंतिम घड़ियाँ आ पहुँचीं, तेरे नाम का प्याला न पहुँचा।
दरबार में तेरे कब से खड़ी, सलाम भी तुम तक न पहुँचा॥

बस इतनी अर्ज़ है राम मेरे, कुछ तड़प तुम्हारी मिल जाये।
प्रेम आँसू से शुष्क जीवन, राम मेरा कुछ खिल जाये॥

गर सुख में तू नहीं मिले, दरयाये ग़म मुझे मिल जाये।
हे राम मेरी दुनिया ले ले, दीदारे मुहब्बत मिल जाये॥

राम मुझे कुछ गर्ज़ नहीं, यह शव रहे या जल जाये।
तेरे दर पे आन पड़े हैं हम, अब रहें रहें या मर जायें॥

पर इतनी अर्ज़ सुन राम मेरे, भिखारी हम तेरे दर आये।
इक बार सामने आ जाओ, तो जीते जी हम तर जायें॥'

परम पूज्य माँ
प्रार्थना शास्त्र 1/57
27.3.1959

ऐसे साधक के लिये दिनचर्या में पल पल में उसका अभ्यास होता है और कण कण उसका अभ्यास करवाता है। वह सीस झुकाये, कर जोड़े हर पल भगवान की कृपा की याचना ही करता रहता है।

हर परिस्थिति, चाहे जैसी भी हो, उसके चित्त में भरे संस्कार रूप में पड़े वृत्ति मल को उभारती है। वह उसे देख कर उसकी निवृत्ति का अभ्यास उसी परिस्थिति में करता है। यही वृत्ति निरोध का पथ है। साधक अपनी साधन सामग्री रूप प्राप्त कण कण के चरणों में पल पल धूलि बनता चला जाता है।

परम पूज्य माँ के तथाकथित साधना काल में, उनके जीवन में इस पथ का उनकी ही कृपा से आज दर्शन पा कर और उससे ही उत्साह व बल पाकर साधक सदगुरु की सहायता से इस पथ पर चलने के लिये उत्साहित होता है। ❖

परम में जाये परम भये,
अज्ञान मल जब धुल जाये..

हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलम्।
तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः।।
मुण्डकोपनिषद् - 2/2/9

अर्थात् - वह निर्मल अव्यव रहित परब्रह्म प्रकाशमय कोश में परमधाम में विराजमान है; वह सर्वथा विशुद्ध समस्त ज्योतियों की भी ज्योति है; जिसको आत्मज्ञानी जानते हैं।

तत्व विस्तार:

उस परम सत्त्व की बात कहें, अज्ञान आवरण सा भये।
पंचकोष में छिपा हुआ, अखण्ड परम नित्य रहे।।1।।

स्थूल अन्नमय कोश रे था, प्राण मनोमय सूक्ष्म था।
विज्ञानमय भी सूक्ष्म था, रजोगुण संग वह भी भया।।2।।

अन्तिम कोश की बात कहें, आनन्दमय जिसे कहते हैं।
प्रज्ञा लोक ईश्वर लोक, द्युलोक उसे कहते हैं।।3।।

हिरण्यमय कोश वह, आनन्दमय को कहते हैं।
परम चेतन आत्म रूप, वा आन्तर में रहते हैं।।4।।

महा समीपस्थ है यह, आनन्द यह इस ही कारण हो।
दु:ख शोक यहाँ न हो, उन्हें लय अवस्था धारण हो।।5।।

दु:ख का अनुभव साधक रे, जिस पल न हो आनन्द वह क्या।
नित्य आनन्द वह क्या होगा, लुप्त हुआ ज्यों पटका।।6।।

कारण तन में जान ले, संस्कार लय हैं रे हुये।
पुन: प्रकट हो जायेंगे, समाधि सों जब रे उठे।।7।।

इस कारण कई साधक जन, समाधि दीर्घ लगाये थे।
परम पद वह पा न सके, संस्कार प्रदुर हो न पाये थे।।8।।

समाधि में आनन्द मिला, उठे तो जग रे भिड़ गये।
दु:ख सुख जग के प्रदुर हुये, देख के ही वह चिड़ गये।।9।।

मन मौन कुछ पल था हुआ, लय अवस्था पाये थे।
मनो नितान्त अभाव वह, रेखा बंधन पाये थे।।10।।

पर इसी कोश में जान ले, परम का अनुभव होये है।
सत्य सार अखण्ड का, मौन में अनुभव होये है।।11।।

हिरण्यमय प्रकाशमय, कोश रे इसको कहते हैं।
आत्म अनुभूति के दर्शन, यहीं छुपे रे कहते हैं।।12।।

परिशुद्ध निर्मल शुभ्र वह, अखण्ड एक रस कहते हैं।
समझ ले कोशन् के परे, आत्म तत्व है कहते हैं।।13।।

कोशन् सों नाता टूटे जब, सर्व परे वह हो जाये।
तन प्राण मन बुद्धि सों, नितान्त परे रे हो जाये।।14।।

प्रज्ञा जागृत हो जाये, समाधिस्थ वह हो जाये।
आनन्द सों भी उठ करके, परम में वह खो जाये।।15।।

अतिक्रमण करें इन कोशण् को, सत्त्व सार तो जान ले।
कोशण् सों जो है परे, सत्त्व स्वरूप पहचान ले।।16।।

मल रहित ज्ञान स्वरूप, प्रकाश रूप को जान ले।
परम आनन्द परम तत्व, आत्म तत्व को जान ले।।17।।

सर्व प्रकाशक ज्योति जो, अखण्ड ज्योत को जान ले।
अखण्ड में जब अखण्ड होई, कौन किसे फिर जान ले।।18।।

कारण स्थूल सूक्ष्म सों, परे होई करी जान ले।
मल रहित आवरण रहित, आत्म आत्म को जान ले।।19।।

कर्मचक्र रे बंद होये, संस्कार सब दग्ध भये।
पूर्व संस्कार प्रवाह, कारण तन कुछ पल रहे।।20।।

निज स्वरूप क्या जान लिया, स्वरूप में जा स्थित हुये।
अज्ञान आवरण सम्पूर्ण, प्रकाश हुये निवृत्त हुये।।21।।

पुन: लौटना न होये, मन प्रादुर्य अब न होये।
स्वभाव वश तन जग वर्ते, बुद्धि भाव न प्रकट होये।।22।।

अहम् कहीं पे न रहे, मैं मम मल रे धुल जाये।
परम में जाये परम भये, अज्ञान मल जब धुल जाये।।23।।

अचिन्त्य रूप चिन्तन करी, मनो मल वह धो बैठे।
समझ सको तो समझ लो, मन को ही वह खो बैठे।।24।।

ज्योतिर्मय को क्या जाना, ज्योति स्वरूप ही हो गये।
परम सत्त्व को क्या जाना, वह परम रूप ही हो गये।।25।।

स्वयंभू विभू को जान लिया, मौन रूप ही हो गये।
कहने को तो यूँ कह लो, शिव रूप ही हो गये।।26।।

राम में राम ही हो गये, सत्त्व तत्व वह आप भये।
किसने मन क्या पाना है, अद्वैत तत्व वह आप भये।।27।।

ज्ञानी जन उसे जाने हैं, ज्ञानी ही पहचान सके।
वा की स्थिति की क्या कहें, वा होई के जान सके।।28।।

बुद्धि से जो है परे, इन्द्रियन् से जो है परे।
अतीन्द्रिय उसको ही रे कहें, अग्राह्य उसको सन्त कहें।।29।।

अचिन्त्य रूप रे वह ही है, उपमा रहित रे वह ही है।
अखिल ज्योत की ज्योत है वह, परम ज्योत इक वह ही है।।30।।

निरासक्त वह निरपेक्ष, निर्मन् रे वह हो जाये।
परमेश्वर को क्या जाना, परम रूप ही हो गये।।31।।

हृदय गुहा में वह है जो, वा तदरूप रे हो गये।
हृदय गुहा में जाये करी, वा अनुरूप वह हो गये।।32।।

स्थूल को अंग लगाते थे, तदरूप रे वह हो जाते थे।
बाह्य प्रज्ञ मनी वह थे, विश्व में खो जाते थे।।33।।

सत्त्व में अब वह लय हुए, हृदय लोक में जा बैठे।
कारण तन लय में ले लो, मौन लोक में आ बैठे।।34।।

परम धाम के वासी वह, सर्व प्रकाशक वह ही है।
विदुषी गण यह जाने हैं, सर्व रचयिता वह ही है।।35।।

ईषण कर्ता अनुमन्ता, सर्व नियन्ता वह ही है।
सर्व आधार निराकार, सर्वाकार इक वह ही है।।36।।

इन्द्रिय रहित वह अंग रहित, सर्वांगी भी वह ही है।
गुणातीत वह कर्मातीत, गुण कर्म भी वह ही है।।37।।

वरद् वह वरेण्यम, वरने वाले वह ही हैं।
सर्व निर्गुणियां वह गुणातीत, निर्गुणियां भी वह ही है।।38।।

निर्विशेष निर्दोष है वह, अजर अमर बस वह ही है।
परिपूर्ण आदि कारण, परम शरण इक वह ही है।।39।।

अशरण के शरणां राम वही, ज्ञानी जन यह जाने है।
सर्व सम्पन्न सर्व परे, सर्व मन भी जाने है।।40।।

अपर ब्रह्म वह जीव भाव, और परब्रह्म भी वह ही है।
जड़ शब्द और भाव है वह, सत्त्व मौन भी वह ही है।।41।।

बार बार वह यही कहें, आत्म ज्ञानी जाने उसे।
वह तो वह ही हो जाये, जो रे मन पहचाने उसे।।42।।

प्राप्तव्य इक वह ही है, ज्ञातव्य इक वह ही है।
उपमा रहित रे वह ही है, अखिल रूप भी वह ही है।।43।।

ब्रह्मा विष्णु महेश है वह, विश्वेश्वर भी वह ही है।
महेश्वर वह जगदेश्वर वह, परमेश्वर भी वह ही है।।44।।

विश्वात्म वह सर्वात्म, विश्व रूप भी वह ही है।
विराट रूप वह विश्व पति, अखिलरूप रे वह ही है।।45।।

ब्रह्म वेत्ता उन्हें जान ले, और न कोई जान सके।
राम नाम ही राह रे है, ओम् कहे वह जान सके।।46।।

17-9-61

जो कर्मों का भोजन आपने बनाया था,
उसी अन्न से आप पैदा होते हैं..

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।।
श्रीमद्भगवद्गीता - 3/14

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।।
श्रीमद्भगवद्गीता - 3/15

अब भगवान सृष्टि चक्र का वर्णन करते हुए कहने लगे :

शब्दार्थ :

1. **भूत अन्न से उत्पन्न होते हैं;**
2. **अन्न बादलों की वर्षा से उत्पन्न होता है;**
3. **वर्षा यज्ञ पर आधारित है;**
4. **यज्ञ कर्म पर आश्रित हैं;**
5. **कर्मों को ब्रह्म से उत्पन्न हुआ जान;**
6. **'ब्रह्म' अक्षर तत्व से उत्पन्न होता है;**
7. **इससे स्पष्ट है कि सर्व व्यापी परम अक्षर ब्रह्म**
8. **यज्ञ में ही स्थित है।**

तत्व विस्तार :

यहाँ कह रहे हैं कि यज्ञ प्रधान है।

क) यज्ञ राही जीवन बनता है।

ख) यज्ञ राही ब्रह्म भी मिल सकता है।

जीवन में जितने यज्ञ किये हैं :

1. उनके कर्मफल अनुकूल तन मिलता है।
2. जीवन में हर स्तर पर यज्ञ अनुकूल ही अन्न मिलता है।

3. जन्म जन्म जो यज्ञ किये, उन्हीं का फल आज तुम्हारे सामने है।
4. जो भी कर्म आप जीवन में पकाते हो, वे फलीभूत हो जाते हैं।
5. पाप पुण्य के बीज जो भी थे, वही तन बनकर फूट पड़ते हैं।
6. गर यज्ञ कर्म किये नहीं, तो फिर आपको जग से अनुकूलता नहीं मिलती।
7. जिसने केवल अपने लिये खाना पकाया हो, उस जीव को:

क) तनो अन्न भक्षण को नहीं मिलता।
ख) मनो अन्न सुख नहीं मिलता।
ग) बुद्धि अन्न ज्ञान नहीं मिलता।

इस कारण दुःख बढ़ते जाते हैं।

भगवान कहते हैं, **'सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं'**, पहले इसे समझ ले! यहाँ जन्म जन्म की बात बता रहे हैं। जो कर्मों का भोजन आपने बनाया था, उसी अन्न से आप पैदा होते हैं। नव जीवन में जो अन्न आपको मिलता है, वह तो आपके यज्ञमय कर्मों पर आधारित है। यदि आपने यज्ञ नहीं किये, तो नव जीवन में आपको पुष्टित करने वाला अन्न नहीं मिलेगा। वर्षा से अन्न की वृद्धि होती है, तो वर्षा नहीं होगी। आप मेहनत जितनी मर्ज़ी कर लो, खेती आपकी उजड़ जायेगी। ज्यों आपने पूर्व जन्म में अपनी हांडी पकाने के लिये दूसरों की खेती उजाड़ी थी, वही आप के साथ आज अवश्य होगा।

आज भी दूसरों के कल्याण अर्थ जीना सीख लो, वरना और भी मुश्किल पड़ जायेगी।

'**यज्ञ कर्मों से उत्पन्न होता है**', इसे भी अब तुम समझ लो। यदि यज्ञमय कर्म नहीं करेंगे, तो यज्ञ कैसे होगा? तो दूजे को क्या खिलाओगे? दूसरों को सुख कैसे दोगे? आपकी इन्सानियत तथा श्रेष्ठता का क्या प्रमाण होगा?

यह सृष्टि की रचना रूपा कर्म भी तो ब्रह्म से उत्पन्न होते हैं। ब्रह्म ने भी तो महा कर्म किया जो यह सृष्टि रची गई। ब्रह्म ने महा कर्म किया, तो संसार में ज्ञान उत्पन्न हुआ।

अब भगवान कहते हैं, ब्रह्म की उत्पत्ति अक्षर से हुई, आत्म तत्व से हुई, नित्य, अव्यय, सनातन, शाश्वत, निर्विकार तत्व से हुई।

नन्हीं! जब यज्ञ स्वरूप स्वयं ब्रह्म हैं और कर्म में यज्ञ प्रतिष्ठित है, तो यज्ञ स्वरूप उस ज्ञान में वह प्रतिष्ठित ही होंगे। जब ब्रह्म यज्ञ रूप ही है, ब्रह्म का कर्म केवल यज्ञ ही है, जब ब्रह्म का रूप, यज्ञ कर्म परिणाम रूप जग ही है, तब क्यों न कहें हर यज्ञ में ब्रह्म का कर्म निहित है। तब क्यों न कहें कि ब्रह्म से ही जीव ने यज्ञ का गुण पाया है? इस नाते तुम यूँ भी कह सकते हो कि ब्रह्म का नाम ही यज्ञ है। यज्ञ ब्रह्म के कर्म को ही कहते हैं। यज्ञ ब्रह्म ही है, क्योंकि नामी और नाम में भेद नहीं होता। जिसके गुण हों, वह गुणी ही होता है। ज्यों नामी और नाम एक हैं त्यों ब्रह्म और यज्ञ एक हैं।

संसार में वृष्टि रूपा जल जो जीवों को पुष्टित करता है, वह यज्ञ पर ही आधारित है, क्योंकि सुख तथा आनन्द इसी में निहित है। आत्मवान बनना है तो भी यही विधि है। नित्य तृप्ति इसी में निहित है। सौन्दर्य तथा श्रेष्ठता भी इसी में निहित है।

वृष्टि, जिसे यहाँ 'जल' कहा है और जो यज्ञों पर आधारित कहा, उसे तुम वह जल

समझो, जो जन्म जन्म के संस्कारों की सिंचाई करता है। उस जल को तुम रेखा रूपी जल मान लो। जो अन्न आपको जिस भी स्तर पर मिलना है, उस अन्न को पुष्टित करने वाली परिस्थितियों को जल मान लो। भगवान कहते हैं कि यह वृष्टि यज्ञों पर ही आश्रित होती है।

नन्हीं जान्! इसे फिर समझ! इस स्थूल संसार में आपको जो भी मिला, वह कर्मों के कारण ही मिला। स्वार्थ पूर्ण कर्म किये तो निर्धनता, दुःख और दरिद्रता मिले। यदि यज्ञ रूपा लोक कल्याण कारक कर्म किये, तो धन दौलत इत्यादि मिले। पुष्टि सुकर्मों का परिणाम है, नाश दुष्कर्मों का परिणाम है।

अन्न जीव के लिये अति आवश्यक तथा अनिवार्य विषय है। यदि अन्न ही कम पड़ जाये तो जीव तड़प उठता है और उसके कुल वाले भी तड़पने लगते हैं तथा मर भी जाते हैं। इस कारण भगवान कहते हैं कि यज्ञ करो ताकि आपको अन्न तथा संसार की अन्य सुविधायें मिलें। इसी में आपकी तथा अन्य लोगों की खुशी निहित है।

ब्रह्म ने भी जग रचना रूपा यज्ञ किया। ब्रह्म यज्ञ स्वरूप हैं। जो काम आप यज्ञ रूप करते हो, उसमें ब्रह्म जैसा कर्म निहित होता है। या यूँ कह लो, उसमें ब्रह्म प्रतिष्ठित हैं। उस कर्म को भी तुम ब्रह्ममय और ब्रह्म का सजातीय कह सकते हो। तुम ब्रह्म जैसे मौन होकर ही वह कर्म करोगे। वह कर्म पावन ही होगा। उस कर्म के फल स्वरूप जग में वृद्धि ही होगी।

बिना अन्न के भूत नहीं हो सकते। पाप की हाण्डी से खाने वाले भूखे ही रहेंगे। वह भी तब ही होगा, जब अन्न की कमी पड़ जाये, या आपके पास अन्न खरीदने को शक्ति न हो। यज्ञ करने वाले के पास अन्न भी होगा तथा अन्न खरीदने की शक्ति भी होगी।

यहाँ भगवान जन्म जन्म के चक्र की बात कर रहे हैं। नन्हीं! बुद्धि और मन के स्तर पर भी जीव को जो अन्न मिलता है, यह भी आपकी यज्ञ की स्थिति पर आश्रित है। आपने जैसा औरों को दिया है, वैसा ही आपको मिल जायेगा।

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति।।
श्रीमद्भगवद्गीता - 3/16

हे पार्थ!

शब्दार्थ :

1. **जो इस प्रकार प्रवर्तित सृष्टि चक्र के अनुसार इस संसार रूपा लोक में नहीं घूमता,**
2. **वह इन्द्रियों में रमण करने वाला, पाप आयु है**
3. **और व्यर्थ ही जीता है।**

तत्व विस्तार :

भगवान कहने लगे अर्जुन से :

1. जो यज्ञ पूर्ण कर्म नहीं करता, वह जीवन वृथा गंवाता है।
2. जो शास्त्र विहित राह का अनुसरण नहीं करता, वह पाप पूर्ण जीवन वाला है।
3. जो केवल अपने लिये जीता है, वह वृथा ही जीता है।
4. जो सब कुछ ले और किसी को कुछ न दे, वह तो संसार पर बोझ ही है।
5. जो केवल अपने लिये ही काम करता है, वह कृतघ्न और दुराचारी है।
6. अज्ञान, मोह से भरा हुआ वह यज्ञ के तत्व को नहीं जानता।
7. न वह कर्म को जान सका और न ही वह धर्म को जानता है।
8. वह अपने से ही बेगाना रह जाता है और अपने स्वरूप को बिना जाने ही मर जाता है।
9. ऐसे इन्सान की बुद्धि भी जागृत नहीं हुई, वह तो व्यर्थ ही जीता रहा।
10. वह सुख की तलाश में इन्द्रियों के पीछे जाता रहा और सुख भी उसे नहीं मिला।
11. वह कुछ भी पुण्य कर्म न कर सका; और जीवन भर पाप ही करता रहा।
12. वह पाप ही कमाता रहा, इसलिये उसे आगे भी पाप पूर्ण दुःखमय जीवन ही मिलेगा।
13. जब बीज ही अच्छे नहीं बनाये, आगे वह क्या पायेगा? उसने व्यर्थ ही जीवन गँवा दिया।
14. वह पाप योनि में जायेगा; क्योंकि जैसा उसने दूसरों से किया, वही तो उसको मिलेगा।

नव जन्म जब आपको मिलेगा, जहान अँधियारा ही होगा। समिधा विपरीत ही पावोगे, क्योंकि, आपने दूसरों को विपरीतता ही दी थी। अन्न भी आपको मिलेगा नहीं, क्योंकि आपने दूसरों को अन्न कभी दिया ही नहीं होगा। जग भी आपको ठुकरायेगा, क्योंकि आप नित्य जग को ठुकराते रहे।

पाप योनि से समझ ले :

1. जीवन भर पाप करने वाला,
2. अशुभ कर्म करने वाला,
3. दूसरों का अनिष्ट करने वाला,
4. कुकृत्य करने वाला,
5. निन्दनीय और असत्मय कर्म करने वाला,
6. असत् पर विश्वास करने वाला,
7. बुरे बुरे विचारों में विचरने वाला,
8. केवल तन की स्थापति के लिये ही जीने वाला,
9. केवल अपने मन की मौज के लिये ही जीने वाला समझ लो।

भगवान कहते हैं कि ऐसे लोग व्यर्थ ही जीते हैं। वे तो भूमि पर केवल बोझ ही होते हैं। केवल दुःख फैलाने वाले ही होते हैं। न वे कभी आप सुख पाते हैं, न दूसरों को सुखी होने देते हैं। न वे कभी सत् पर चलते हैं, न दूसरों को सत् पर चलने देते हैं। वे पापी लोग पाप ही करते हैं और पाप का नित्य विस्तार ही करते हैं।

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः।
आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते।।

श्रीमद्भगवद्गीता - 3/17

किन्तु,

शब्दार्थ :

1. **जो जीव नित्य आत्मा में ही रमण करता है;**
2. **अपने आप में तृप्त रहता है;**
3. **अपने आप में संतुष्ट रहता है;**
4. **उसके लिये कोई कर्तव्य नहीं है।**

तत्व विस्तार :

देख नन्हीं! यहाँ भगवान आत्मवान के बारे में कह रहे हैं कि :

1. जो आत्मवान हो चुका, उसके लिये कोई कर्तव्य नहीं होता।
2. जो नित्य तृप्त हो चुका, उसे अब कुछ भी पाना नहीं होता।
3. वह तनत्व भाव से ऐसा उठा कि तन ही उसका नहीं रहा। तन जो करे सो किया करे।
4. जो आप्तकाम हो चुका, अब उसकी कोई कामना नहीं रहती।
5. उसका काज कर्म कोई नहीं रहा। न ही उसे कुछ किसी को देना होता है, न किसी से कुछ लेना होता है।

6. वह कृत्सन्कृत् हो चुका; जो करना था, वह कर चुका है।
7. यज्ञ भी पूर्ण हो गया, तब ही तो वह आत्मवान होगा।
8. उसका हर कर्म अब यज्ञ ही होता है।
9. व्यक्तिगतता में ही नहीं रहा, तो किसी के प्रति वह कैसे कर्तव्य करे?
0. जब वह नित्य संतुष्ट हो गया, आनन्द की तलाश में भी वह क्या बढ़ेगा?

क) उसका अहंकार गया।

ख) उसका 'मम' भाव भी नहीं रहता; मोह और तनोभाव भी नहीं रहते।

ग) जब तन ही उसका नहीं रहा, वह अपना पराया किसे कहे?

घ) जब जीवत्व भाव ही चला गया तो जीवन का प्रयोजन ही नहीं रहता।

ङ) ऐसे का कोई कर्तव्य नहीं रह जाता।

किन्तु नन्हीं! यह समझ ले कि यह स्थिति उसने कैसे पाई है?

1. जीवन भर वह ज्ञान अग्न में अपने कर्मों का यज्ञ करता आया है।
2. वह पल पल अपने तनत्व भाव की आहुति देता आया है।
3. वह अपने आपको भूल कर नित्य कर्तव्य निभाता आया है।
4. अपने आपको भूल कर वह अपना तन जग को देता आया है।
5. अपने मान को भूल कर वह लोगों के मान का संरक्षण करता आया है।
6. अपने सुख को भूल कर वह लोगों को सुख देता आया है।
7. अपने नाम को भूल कर वह लोगों के नाम को स्थापित करता आया है।
8. अपने सब हक़ भूल कर, लोगों के अपने पर जो हक़ थे, उन्हें निभाता आया है।

नन्हीं! वह तो जीवन भर आत्म ज्ञान विवेक की अग्न जला कर अपना तनत्व भाव जलाता आया है, तब ही तो आज अपने को भूल चुका है। आज अपने तन से तदरूपता छोड़ कर अपने ही तन से नाता तोड़ आया है। अब उसका कोई कर्तव्य नहीं, क्योंकि कर्तव्य तो तन के नाते होते हैं।

1. तन तो अपने स्वभाव से बँधा, परिस्थिति अनुकूल सब कुछ करता ही जायेगा।
2. 'मैं' रूपा कर्ता के रहित तन भगवान का मन्दिर बन जायेगा।
3. वह तन करता तो सब कुछ है, किन्तु उसमें 'मैं' रूपा कर्म को अपनाने वाला अहंकार नहीं होता।

भगवान ने आगे जाकर स्वयं भी कहा है कि, 'मेरा कोई कर्तव्य नहीं, किन्तु फिर भी मैं कर्मों में विचरता हूँ।' भगवान स्वयं भी तो जब जब जन्म लेते हैं, वह यज्ञ रूपा कर्तव्य धर्म की स्थापना करते हैं।

नन्हीं! आत्मवान को मानो सबका कल्याण करने की आदत पड़ जाती है। वह तो सर्वभूत हितकर हो जाते हैं, उनके पास जो आये वह उससे उसी के काज ठीक ढंग से करवाते हैं। ❖

मान, अपमान व भय से
किस कदर शून्य कर देते हैं आप!

श्रीमती पम्मी महता

हे संन्यास और वैराग्य स्वरूप माँ, तुझे कोटि कोटि प्रणाम है मेरा!

हे ईश! आपके जीवन को प्रणाम है.. अति अति उत्तम व श्रेष्ठ है जो जीवन!

आपका वैरागी मन तो तभी देखा था जब आपने अपना सर्वस्व दे कर भी मुझे ऐसे छोड़ दिया था.. जैसे कोई अजनबी हो! मगर वह आपका छोड़ना इसलिये था कि कहीं मैं आपके तन से ही संग न कर बैठूँ, कहीं शरीर से ही मोह न कर बैठूँ! यह आपकी अपने प्रति उदासीनता का परिचय था।

आप स्वयं ही गोपाल हैं.. और आप ही गोपी भाव.. आप ही की लीला का यह संयोग देख आत्मविभोर हो उठी थी मैं! कौन जाने किस जन्म की यह पुकार थी जो प्रभु ने गोपी भाव में ही अद्भुत दर्शन दिये! आपके प्रेम की पराकाष्ठा में आपकी असीम निःसंगता का यह अनुभव ही था, जिसने इन पावन चरणों से बाँध लिया मुझे, उस प्यार की डोर से सदा के लिए!

धन्य हैं आप प्रभु.. और धन्य है आपकी लीला! धन्य हैं हम, जिन्हें आपने अपनी इस लीला के अलौकिक दर्शनों का भागी बना लिया! कैसा वैराग्यपूर्ण प्यार मिला आपका कि मन को जग से ही उठा लिया.. और हरि चरणन् की प्रीत का ऐसा रसास्वादन् दिया! अब कहाँ जाये कोई इन चरणों को छोड़ कर, जिन्होंने बंधन मुक्त ही करा दिया। धीरे धीरे आपने अपने अनगिनत रूपों में निज स्वरूप का दर्शन दिखला दिया, अपना आप लुटा कर, पल पल निज दर्शन दे कर हमें उस प्रेम सों लिपटा लिया। क्या गाऊँ उस प्रेम की महिमा, जिस प्रेम ने प्रेम से परिचय करा दिया!

आप की कृपा तो प्रभु जी अपरम्पार है, आपका प्रेम असीम है, आपके करम का कोई अंत नहीं, बस नवाज़े ही चले जा रहे हैं.. अनथक प्रेम में मग्न, हे प्रभु! आपका झुकाव ही आपका संन्यास है!

चाकरवत् आप सभी के स्वप्न साकार करने में लगे हुये हैं। कैसे आपने मेरे और अपने बीच में पड़ी मेरी खाईयों की भरपाई की है.. और मुझे अपनी समतल भूमि पर ला धरा है! जगत के मान, अपमान व भय से किस कदर शून्य कर देते हैं आप! आपकी परिपूर्णता में जग के वैभव का महत्व खो जाता है। धन्य हैं प्रभु हम, जिन्हें आप अपना असीम प्रेम देने के लिये चुनते हैं!

आप ही निराभिमान करके इस निर्धन की झोली अपने प्यार से भर देते हैं। आप ही का प्रेम है जो चहुँ ओर से समेट कर हमें, आपकी ओर ले जाता है। कैसा अद्भुत व विलक्षण प्यार है आपका.. जो कुछ माँगता ही नहीं कभी! वह सभी के लिये है, वह तो सभी का प्यारा है, इसीलिये मेरा भी है। एकरस होने से ही आपका प्रेम अमर है।

हे भगवन! आपके और मेरे बीच अब मेरे तन मन की कोई भी वासना/चाहना परदा बन कर न आये! आपके इस पावन प्रेम को हम इसी पावनता में ग्रहण कर पायें।

आईये श्री हरि, अपने को मेरे जीवन के हर पहलू में उतरने दीजिये.. ताकि एक एक करके मेरे सभी अज्ञान आवरण उतर जायें।

हे भगवान! आप ही आप में प्रवाहित हो जायें, वह उदासीनता का पहलू हो या वैराग्य का, या फिर संन्यास का, इन को अपने परिपूर्ण परिचय में उतार लीजिये, ताकि हम आपके चरणन् में बैठे पूर्ण समर्पण भाव से आप ही के नाम में मग्न रहें। हे परवरदिगार! आप ही ऐसा करम फ़रमाइये, कि आपकी पवित्र वाणी को सुनते ही हम उसे अनुभव में उतार लें। उसी प्रवाह में प्रवाहित होने की हम याचकों को इजाज़त दीजिये! आ मन, ज़रा बैठते हैं हरि चरणन् में.. उन्हीं के मुखारविन्द से उस हक़ीक़त को जानने के लिये, जो जीवन पथ है! हम भी इसी पथ पर अग्रसर हो पायें, इसी विनीत अरदास के साथ उस परम पुनीत ज्ञान स्वरूप के चरणों में बारम्बार नतमस्तक होते हैं!

यही बिनती है - बस उन्हीं का दीदार पाते हुये हम उन्हीं के शरणागत हो जायें। उन प्रेमघन प्रभु ने यह कृपा करी है तो भक्ति भी वह स्वयं ही देंगे। श्रद्धा और भक्ति बिन हम स्वयं वहाँ कैसे क़दम उठा पायेंगे? 'मैं' यह पावनता स्वयं वहाँ कैसे ला पायेगी?

आईये श्री हरि! यह जो पूर्ण मिलन की पिपासा जगाई है, उसे पूर्ण मिलन में ही विराम दीजिये। आईये! मुझे पूर्णतयः ही शरण में धर लीजिये और अपने ही भाव में बहा कर ले चलिये! हे प्रभु जी! आपके श्री चरणन् में ही हमारा विनम्र नमन स्वीकार हो जाए और आप ही आप छा जायें जीवन में!

- पम्मी

(जालन्धर से श्रीमती प्रॉमिला महता के पत्र में से उद्धृत) ❖

स्तुति गान

सुश्री छोटे माँ

साधक अपने आप को साधना चाहता है। साधने का भाव तो तभी उठे जब वह आंतर्मुखी हो, जब वह अपने आंतर में बैठ कर दर्शन कर सके कि परिस्थिति में जो भी भाव उठा, संकल्प अथवा मन में विकार उठा उसका कारण वह आप ही है, जग नहीं है। यह भाव जब वह जीवन में मान लेता है और दीर्घकाल अभ्यास करके अपने जीवन में धारण कर लेता है, तो इसी भाव में जग विचरण उसका सहज स्वभाव बन जाता है। तब परिस्थिति में जिसे विपरीत मान कर वह भड़क जाता था अब सहज ही जीवन में पुकार उठा-

'जग ने दुःख मुझे नहीं दियो, क्यों दोष लगाऊँ मैं।'

अब आंतर में रह कर वह अपने परम पिता के चरणों में खो जाना चाहता है और यही प्रार्थना करता है-

'नमस्कार मेरा कर स्वीकार, मैं तेरे चरण में आई हूँ'

कभी उसे लगता है कि वह भगवान के चरणों में खो गया है, तब वह पुकार उठता है :

चरण चढ़ा कर वापिस लूँ, यह तो मेरा धर्म नहीं।
ठुकराओ या मार भी दो, अब मेरा कोई कर्म नहीं।।

इस प्रकार ज्यों ज्यों प्रीत बढ़ती जाती है त्यों त्यों वह अपने आपको चरणों में चढ़ाने के लिये अखंड ध्यान में संलग्न रहने के लिए सर्वोच्च साधन उन्हीं की स्तुति गान को ही मानता है। यही महानुभवी संतजन के जीवन से वह प्रसाद प्राप्त करता है। अब वह जानता है कि तन ही वह वाहन है जिस पर बैठ कर वह निष्काम सेवा करता है। उसकी निष्ठा इसी भाव में कि वह तन धरती वालों का धरती का है और माटी रूपा तन धरती में ही समा जायेगा। जब तक जीवित है इसमें रह कर निष्काम सेवा करते हुए मन और बुद्धि को चरणों में अर्पित कर देता है। चरणों में रहते हुए वह विधिवत् पूजा करता हुआ अपने मन और बुद्धि से ही प्रार्थना करता है :

'हे मेरे मनबुद्धि, मैं तुम्हें एक बात कहना चाहता हूँ कि अब मैं आपके स्वामी को ही ध्याना चाहता हूँ अब इतनी ही पुकार हो कि अनन्य भाव से चित्त उन्हीं में खोया रहे। जो भी नाम लूँ' उसे हृदय गुहा में बैठे हुए भगवान सुन लें और मुझे आशीर्वाद चाहिये। केवल मात्र अब आपकी ही ज्योति फैले और कीर्ति का कीर्तन करते हुए मैं चरणों में खो जाऊँ।

मैंने यह भी सुना और दर्शन किये कि जिन सन्तजन महात्माओं ने आपको पुकारा, वह आपके नाम में निमग्न रहते हुए चरणों में ही खो गये। उन्होंने पावनी नाम लिया और राम में जाकर एक हो गये। उसी प्रमाण को सम्मुख रख कर उन्हीं के पद चिन्हों पर चलना चाहती हूँ। इस पथ पर चलने के लिए इतनी ही प्रार्थना है कि मैं जो भी पठन पाठन करूँ उसकी रक्षा वह आप करें। उस पूजा पाठ में जो कोई त्रुटि रह जाए उसे पूर्ण कर दें यदि मन में कोई भाव उठे तो उसे सत की राह पर धर दे।

ओ संतजन! आप तो भगवान के चरणों में बैठ कर इन्हें ध्या चुके हैं और उसका प्रसाद भी प्राप्त कर चुके हैं। आप अनुभवी हैं आप तो पथ को जानते हैं इसलिये मैं आप से ही प्रार्थना करती हूँ कि आप ही मेरे पथ प्रदर्शक हैं। आपने ही उस परम तत्व को प्रतिपादित किया है। आपने ही चरणों में बैठ कर सब श्रवण किया। आपने ही शास्त्रों के वचन सुने, राम नाम की चर्चा भी आपने करी, मैं आपके चरणों में चित्त धरती हूँ।

स्वयं पढ़ पढ़ कर तो मैं हार गई हूँ। इसलिये आपकी शरण में कृपा याचना के लिए आई हूँ। अब जहाँ कहीं पथ भूलूँ आपने ही मुझे आगे लेकर जाना है। आप ही मेरे पूर्वज हैं, आप ही मेरे गुरु हैं आप ही शास्त्र की प्रतिमा हैं, क्यों न

कहूँ राम रूप भी आप ही हैं। मेरी इतनी ही विनती है कि मैं ध्यान निमग्न हो कर जो राम नाम लेती हूँ जो साधना करती हूँ, वह सार्थक हो जाए। इसका ध्यान तो आप ने ही रखना है। आप की ही कीर्ति फैली हुई है, आप ही जानते हैं कि एक साधक की स्थिति साधना में क्या होती है। आपका लक्ष्य भी वही था, आप भी जब साधक थे तब आपको किन संशयों ने घेरा था। आप ही जानते हैं कि कैसे आपने अपने को उन बन्धनों से मुक्त किया।

हे संतजन! मुझे भय लगता है कि कहीं मैं शास्त्र विरुद्ध न हो जाऊँ । मैंने राम जी के चरणों में खोना है, कहीं भूल न हो जाए। यह भाव जो इस पल बह रहे हैं यह हृदय से बह रहे हैं, इस पल तो राम राम कह रहे हैं परन्तु कई बार इन्हें मैंने विपरीत राहों पर बहते हुए भी देखा है। आप तो सब जानते हैं, आप अनुभवी हैं आपसे यही प्रार्थना है कि मुझे सत की राह सुझा दें। जो वाणी में वाक् शब्द रूप बह रहे हैं उसका अनुभव आप करवा दें, बस इतनी विनती लाई हूँ।

हे मुनि गण! आप ही मन और बुद्धि के स्वामी हैं। आप से विनती करती हूँ कि जो आपके शास्त्रों का मैं श्रवण करती हूँ, वह अभी नहीं हो पाई। आप ही मन बुद्धि के मालिक हैं, यह जान कर 'मैं' आज आपकी शरण में आई हूँ। आपको ब्रह्म कह कर नमस्कार कर रही हूँ। आप से ही मैं यह पूछती हूँ कि कौन सी मैं है जो बारम्बार पुकार रही है जिसे अब लग अनुभव नहीं हो रहा। मैंने जब नमो कहा, तो उस पल अपना अस्तितत्व मिट जाना चाहिए था। चरणों में सीस झुका, चरणों में खो जाना चाहिये था। मैं बार बार नमो तो करती हूँ यह नमो कह कर भी नमस्कार स्वीकार क्यों नहीं हो रहा।

हे संतजन आज इतनी ही विनती लाई हूँ कि जो मैं आप की महिमा का गान करती हूँ, वह सफल हो जाये। मैं हर पल प्रेम में मग्न रहूँ, जो कीर्ति करती हूँ, वह कीर्तिवान हो जाये। मैं अपनी महिमा नहीं तेरी महिमा चाहती हूँ। जो मैंने तेरे चरणों में बैठ कर नित्य राम राम कहा है, जो जिस तन और मन से राम राम कहा है, जो आन्तर से भाव बहा है, वह कीर्तिवान हो जाये, वही नाम सब के हृदय में अंकित हो जाए।

आप इतना आशीर्वाद दे कि अब मन शंकित न हो पाये। यह जग सच ही राम का रूप है मानो हर रूप में वह आप ही पधारे हैं, अथवा जिन ऋषिगण ने शास्त्रों को प्रतिपादित किया, जग को उन शास्त्रों के राही ब्रह्म को दर्शा दिया। वह जो पथ हमें दर्शा गये, उनका अनुभव अव कीर्तिवान हो जाये। सब उसका गान करके उन दिव्य लोक के वासी सन्तजन के चरणों में खो जाये।

हे भगवान! मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि यह जो भाव रूपा पुष्प चरणों में धरे हैं इनकी भनक कानो तक पहुँच जाये। इनके राही मैं हे राम! तेरे चरणों में आना चाहती हूँ। इतना जानती हूँ कि तू यदि मेरी न भी सुने, परन्तु उन संतजन की तो सुन लेगा। बस किसी विधि भी हो अब चरणों में खो जाना चाहती हूँ-

कोई विधि बता दे राम, तेरे चरणों में खो जाऊँ।
इतनी ही मोरी विनती है, बस तेरी ही मैं हो जाऊँ।।

हे भगवान! यह मन, बुद्धि जब जो भी विचार करे इनमें सब विचार अब तेरे हो। हे मन! अब इतनी विनती है केवल तुम राम राम ही किया करो। इतना तो तुमने जान लिया है कि केवल राम नाम ही सत है, वही सर्वश्रेष्ठ है। इसलिये तुम केवल राम राम ही किया करो। हे मन! वह राम ही तेरे आदि कारण हैं, इसलिये तुम राम राम ही किया करो। वही तेरे शक्तिपति हैं, सो उन्हीं का ही ध्यान किया करो।

हे मन! वह राम ही तेरे आदि कारण हैं, इसलिये तुम राम राम ही किया करो। वही तेरे शक्तिपति हैं, सो उन्हीं का ही ध्यान किया करो। हे मन! तू यह क्यों भूल गया कि उस बलवान से सत्ता पाकर ही, तू सत्ता पाकर ही तू सत्तावान हुआ। आज तू क्यों इतराता है। जिसने तुझे सब दिया उसी मालिक से नाता जोड़, इसी में ही तेरा कल्याण है। वह अन्तर्यामी तेरे आंतर में तेरे हृदय में पाये जाते हैं सो परमात्मा से प्रार्थना कर कि हे भगवान! मैं आपसे संयुक्त हो कर आपको ही प्रणाम करती हूँ। इस पल जो भी भाव है वह आप की ही महिमा गा रहे हैं। मैं तो कोई और पथ नहीं जानती। मेरा चित्त समाहित हुआ है। मैं तो इतना ही जानती हूँ कि यह राम राम कह रहा है।

हे राम! यह बुद्धि क्या है, यह मनो प्रवाह क्या है, मैं इसके विषय में नहीं जानती। बस इतना ही जानती हूँ कि आन्तर्मुखी हो कर आंतर में केवल राम राम ही होना है। ध्यान की महफ़िल में केवल तेरा नाम ही होना है। बस अब इतनी ही प्रार्थना है कि राम गुँजार मेरे अंग अंग में छा जाये। सुर, नर और देवता को यही ध्वनि सुनाई दे।

हे दिव्य लोक के वासी ब्रह्मा, विष्णु, महेश आपसे इतनी ही विनती है कि मैं चरणों में खो जाऊँ। यह जो सारे देवतागण हृदय में बसते हैं, वह स्वरूप में समा जाये। अब तक अपनी अज्ञानता के कारण इन्हें हिय में ही समा रखा था। अब सब प्रत्यक्ष सामने दर्शन दें। बस अब इतनी विनती लाई हूँ। इनके दर्शन पाकर ही मैं चरणों में खो जाऊँगी। इस अमूल्य जीवन को निरर्थक नहीं गँवाना चाहती। जीते जी देहपात से पहले चरणों में खो जाने की विनती लेकर आई हूँ। बस अब जीवन में साधना आरम्भ हो जाये।❖

मन्मना भव

पिता जी - अर्जुन ने भगवान से श्रेय का पथ पूछा था। भगवान ने कहा, 'मन्मना भव' - तू अपना मन मुझमें लगा। परन्तु जब भगवान ने भक्तों के गुण बताये तो उसमें इस बात पर ज़ोर दिया कि तुम आत्म शुद्धि करो और संसार की सेवा करो। मनुष्य को भगवान में चित्त लगाना चाहिये या सेवा और आत्म शुद्धि का ख़्याल रखना चाहिये?

सारांश - *चेत, अचेत और अर्द्धचेत में मान्यतायें, ज्ञान, अज्ञान और अंहकार इत्यादि छिपे रहते हैं। उन छिपे संस्कारो की मानो वाष्प हमें विभिन्न कर्मों में प्रेरित करती है और अन्धकारवर्धक बन जाती है। 'मन्मना भव' कह कर भगवान ने अपने जैसे चित्त की बात की है जो निर्मम, निर्मोह, निरहंकार, तन, मन, बुद्धि तथा तनत्व भाव से परे महामौन, निर्मल चित्त है। कृष्ण से, यानि सत् से योग हो जाये तो जीवन के समस्त् कर्म और कर्त्तव्य सेवा ही रह जायेंगे। इसी स्थिति की उपलब्धि का पथ श्रेय पथ है।*

प्रश्न अर्पण

'मन्मना भव' श्याम कहा, फिर आत्म शुद्धि की कही।
जग सेवा की बात कही, राज़ नहीं यह समझ पड़ी।।1।।

हम सेवा करें या कहो, आत्म शुद्धि की हम सोचें।
या चित्त तुझमें लगा करके, और कुछ नहीं सोचें।।2।।

तत्व ज्ञान

अचेत चेत और अर्द्धचेत, ज्ञान अज्ञान का चित्त धाम।
तव संस्कार शुभ अशुभ, संग अहंकार है यह धाम।।3।।

प्रत्यक्ष निजी जीवन की, परिणाम रूप प्रतिक्रिया वहाँ।
वाष्प रूप नियोजित कर, कर्म भाव सारांश वहाँ।।4।।

'मैं' 'मम' मोह और अँधियारा, सत् विध्वंसक कोश वहाँ।
अशुद्ध चित्त जब हो जाये, समस्त अँधियारा स्रोत वहाँ।।5।।

अब शुद्ध चित्त की बात सुनो, श्याम चित्त की कहते हैं।
वह उदासीन चेत अचेत, अर्द्धचेत परे जो रहते हैं।।6।।

ज्ञानघन वह ज्ञान रहित, निर्मम वह है अहं रहित।
तन मन बुद्धि सों है परे, महा मौन है निर्मल चित्त।।7।।

सत् स्वतः वहाँ बहा करे, चित्त राहों में न रोके।
आनंद ही परिणाम भये, चाहे जो भी वह करे।।8।।

यहाँ पे श्याम ने यही कहा, वा समान जब चित्त भये।
ब्रह्म योगस्थ बुद्धि भये, परम समान जीवन भये।।9।।

चित्त शुद्ध जब हो ही गया, सब कर्म स्वतः ही होयेंगे।
कर्त्तव्य बिना कुछ नहीं रहे, सब काज सेवा ही होयेंगे।।10।।

ज्ञान-विज्ञान सहित

'मन्मना' जब श्याम कहा,
सत्य हृदय में धरो कहा।
निरन्तर सत्य गर हृदय बसे,
चित्त शुद्ध हो जायेगा।।11।।

कर्म जो भी उस पल हो,
वह राममय ही होयेगा।
कर्म में फिर नहीं नहीं,
सत्य में साधक खोयेगा।।12।।

गर इक पल राम को न भूलो, वह साक्षी बनी के संग रहे।
गर राम राम मन राम कहे, क्रूर भाव नहीं उठ सके।।13।।

हो एक भाव हो प्रेम भाव, कौन चित्त फिर शुद्ध करो।
उस चित्त का अब क्या कहना, राम चरण में टिका जो हो।।14।।

सत्य प्रतिष्ठित जिसमें हो, जहाँ सत्य साक्षी नित्य रहे।
वा कर्म सुन साधक तब, सर्वश्रेष्ठ ही हो सके।।15।।

वह कर्म करे कोई नहीं नहीं, जो होये सो होयेगा।
वह आप करे कुछ नहीं नहीं, वा प्रेरक राम ही होयेगा।।16।।

जो भी कर्म जब भी करे, परिस्थिति जैसी भी हो।
साक्षी राम निरंतर हों, सत् पथ पे कभी न भूल हो।।17।।

वह राम को देखे कर्म नहीं, निष्कर्मी हो जायेगा।
नैष्कर्म सिद्धि साधक, तब ही तो वह पायेगा।।18।।

सो राम में चित्त जब नित्य रहे, चित्त शुद्ध हो जायेगा।
हर कर्म फिर जो भी करे, चरणन् में चढ़ जायेगा।।19।।

जब लौ भावना यह न हो, तो पृथक् पृथक् पथ माने है।
है कर्म और है प्रेम और, है ज्ञान भिन्न यह माने है।।20।।

कर्म की गति भी पुनि समझ, जो 'मैं' करे कहे मेरा है।
जो होना सो हुआ करे, वह कर्म कहो क्या तेरा है।।21।।

जब प्रेरक 'मैं' को माने हो, तो कर्ता भी बन जाओगे।
नैष्कर्म सिद्धि साधक, तब किस विध तुम पाओगे।।22।।

गर मन में तेरे राम हों, साक्षी बन नित साथ रहें।
चरण में टिके साधक तेरे, निरंतर मन के भाव रहें।।23।।

परिस्थिति जो आ जाये, जानेगा राम ही लाये हैं।
उनका ही कोई काज है, वह ख़ुद करवाने आये हैं।।24।।

फिर कर्म जो होगा वा प्रेरक, मन नहीं वहाँ होयेगा।
स्थूल रूप में जो हुआ, प्रेरक स्थूल ही होयेगा।।25।।

फिर प्रेरक तू जब नहीं रहे, तो प्रेरित तू नहीं होयेगा।
जो भाव प्रवाह तेरा बहे, उसमें तू नहीं खोयेगा।।26।।

कर्म करे जो तन तेरा, वह स्वतः ही होयेगा।
कर्तापन में 'मैं' तेरा, उस पल नहीं तब खोयेगा।।27।।

ऐसी भावना गर समझे, तब ही सफल हो पायेगा।
सत् में चित्त हो टिका हुआ, राम हिय बस जायेगा।।28।।

गर साक्षी श्याम नहीं बना, सत्य से प्रीत नहीं होगी।
जीवन तेरी राम बिना, सत्यपूर्ण फिर न होगी।।29।।

सो राम राम अब राम कहो, राम निरन्तर चित्त धरो।
राम को सत्य ही जान करी, राम में ही अब मन धरो।।30।।

जब नयन में राम ही आ जायें, तो प्रेम भी बह ही जायेगा।
प्रेम बहे जब नयनन् से, तो चित्त शुद्ध हो जायेगा।।31।।

राम बुला तो तभी सको, जब मन राम को मान ले।
सत्य को पहचाने जो, तब कर्म राह भी जान ले।।32।।

कर्म में सत्य प्रवाहित हो, तब ही हो गर हृदय में हो।
गर हृदय में सत्य नाहिं हो, वा कर्म में सत्य क्योंकर हो।।33।।

यह जान करी मन समझो, उन रुचि अनुकूल ही कहा।
श्याम कहा तू जो भी करे, साधक वह ही करता जा।।34।।

पर साक्षी सत्य बनाओ तुम, फिर त्रै मिलन हो जायेगा।
स्थूल लोक तोरा कर्म लोक, सूक्ष्म सों मिल जायेगा।।35।।

सूक्ष्म में है मनो प्रवाह, सत्य वहाँ रह जायेगा।
चित्तवृत्ति और भावना, में भी सत्य समायेगा।।36।।

बुद्धि योग फिर कर्म योग, प्रेम योग स्वतः हो जाये।
गर चित्त में बस राम रहे, तो योग प्रधान ही हो जाये।।37।।

हो त्रै मिलन फिर त्रै पति, त्रै अतीत हो जायेगा।
कर्म से मन से ज्ञान से, तब ही तू उठ पायेगा।।38।।

सो राम राम अब राम कहो, कोई भी पथ मन तुम लो।
गर सत्य साक्षी तोरा भये, त्रै मिलन तब ही तो हो।।39।।

कर्म कौन और कैसे हैं, यह कुछ भी मैं न जानूँ।
सत्य से लग्न ही हो जाये, तब राम मिलें बस यह मानूँ।।40।।

कर्म करूँ तो तोरे लिये, कोई भाव भरूँ तो तोरे लिये।
कुछ बात करूँ तो तोरे लिये, जीऊँ भी तो तोरे लिये।।41।।

गर ऐसी भावना हो जाये, तब गुणातीत हो पायेगा।
भक्ति गुण और कर्म गुण, ज्ञान संग भी जायेगा।।42।।

गुणातीत तब ही होये, जब त्रै मिलन हो जायेगा।
त्रै में पूर्ण राम ही हों, फिर पूर्ण में खो जायेगा।।43।।

सेवा आत्म शुद्धि का, इस पल ध्यान तू नहीं करो।
सत् में चित्त जो टिक जाये, जान मना यह स्वतः ही हो।।44।।

साधक की ओर से प्रार्थना

सुन हे राम अब आ करके, चित्त में मोरे समा जाओ।
कौन पथ क्या वह है, आकर तुम ही सुझा जाओ।।45।।

ज्ञान न जानूँ प्रेम न जानूँ, योग की बतियाँ न जानूँ।
क्योंकर कौन है राम भजे, मैं ऐसी बात भी न जानूँ।।46।।

पर राम राम तुझे राम कहूँ, अब तुझको आना ही होगा।
देख राम तुझे झुक करके, अब मुझे उठाना ही होगा।।47।।

पर विधि है मोपे नहीं नहीं, मैं तो अब बस राम कहूँ।
बाकी बातें न समझूँ, है सत्य राम इतना समझूँ।।48।।

गर सत्य हृदय में आ जाये, तो बाकी हो ही जायेगा।
फिर रेखा में जो भी हो, जीवन प्रमाण हो जायेगा।।49।।

को' पथ पे जाऊँ न पूछूँ, अब क्या करूँ यह न पूछूँ।
सत्य है तू तुझे हृदय धरूँ, यह कैसे करूँ इतना पूछूँ।।50।।

और पूछ पूछ के पुनि कहूँ, कुछ समझ नहीं आता है।
सत्य पथ से राम कहो, मन बिछुड़ बिछुड़ क्यों जाता है।।51।।

सो राम राम बस राम कहूँ, तुझको राम मैं मान लूँ।
जो तूने कहा वह सत्य कहा, यह भी बात मैं जान लूँ।।52।।

तू इन सबसे है परे, योग परे तू ज्ञान परे।
कर्मन् से तू है परे, गुणातीत तुझे जग कहे।।53।।

अब कर्म की बात कही, या प्रेम की कह कर के।
ध्यान लगाऊँ ज्ञान पढ़ूँ, ऐसी बात अब कह कर के।।54।।

दूर तू मुझको नहीं करो, अपनी बात अब आन कहो।
प्रतिष्ठित सत्य हृदय में हो, इतनी कृपा अब तुम करो।।55।।

7.12.1965

तू जानती है तेरी अपनी कमाई कुछ भी नहीं,

जो तू दे सके..

श्रीमती पम्मी महता

हे कृपालु दयालु नाथ, आप जिस शै व परिस्थिति को मेरे लिये चुनते हैं व उस में मुझे ढालने के लिये जो आप प्रसाद रूप में देते हैं.. और कहते हैं, 'मैं जो भी देता हूँ उसे क़बूलता हुआ चल.. क्योंकि तेरी साधना के लिये यही अनुकूल है.. ये पल तेरे लिये teachable moments (सीखने वाले पल) हैं। इस लिए बस तू चलता ही चल!'

साधना पथ पर दिया आपका हर क़दम व आपकी वाणी का परम सत्य मेरे अंग संग ही रहता है ताकि इस पथ पर मेरे क़दम सदैव स्थिर रहें। ज़हे-नसीब मेरे, जो आप मुझे स्वयं लिवाये लिए जा रहे हैं.. फिर आपका दिया कैसे न सिर माथे पर उठा लूँ.. कैसे न असीम श्रद्धा व आस्था से इस देन के प्रति व आपके प्रति नमन किए रहूँ व चलती चलूँ!

सुन रे मना, परिस्थितियाँ तो आती जाती रहेंगी, लेकिन तेरी लग्न उन श्री हरि माँ के श्री चरणन् में निरन्तर बढ़ती रहे.. तू जानती है न, यह कहीं छूट गई तो तेरा पतन निश्चित है। सो आ, धीरज से काम ले, क्योंकि तुझे आगे से आगे ले जाने के लिए ही तो माँ प्रभु जी ने सारी व्यवस्था की हुई है तेरे लिए! यह तू भी अच्छी तरह जानती है.. आप माँ ने तो कहीं भी कोई संशय की गुँजाइश ही कहाँ छोड़ी है। भगवान जी इसी लिए तो सगुण वेश में आ कर तुझ पे अपनी करुण कृपा बरसा रहे हैं।

ऐसा अद्भुत व विलक्षण तथा दिव्य प्रसाद का अवसर कहाँ मिलेगा तुझे.. आ, उन कृपालु प्रभु माँ के वरदहस्त को देख.. उनके इस अनुपम सौंदर्य को देख.. किस ख़ूबसूरती से वह आप स्वयं तुझे लिवाये जा रहे हैं! उनकी प्रेरणा के दिव्य स्रोत को देख और मन ही मन नतः श्री बारम्बार होते हुये मन, वचन व काया से सभी ग्रहण करते हुये चलती चली चल!

यह भगवान माँ की दी हुई रहगुज़र ही ऐसी है, जिसपे चलते ही चले जाना है तुझे.. तू तो जानती है, तेरे आंतर के सभी संशय ख़त्म करके ही तुझे यह स्थिर चित्त दिया है.. बस उन्हीं के दामन को बड़े ही प्रेम से पकड़ कर चलती चल! यह रहगुज़र ही ऐसी है कि इसपे चलते ही चले जाना है.. इसका न तो कोई आदि है और न अंत! युगों से आप ने हर क़दम अपने से बनाया है इसे.. आप देस, काल, परिस्थिति के अनुकूल ही मानस की जात के लिए, हे करुणाकर, चलते ही चले आ रहे हैं.. जो हम आपसे केवल आप ही को माँगते हुये चलें।

याद आते हैं शुरु के वह पल.. जब आप ही ने मेरे मन की पसंद ख़ुद को बना लिया था.. ज़ाहिर है, इसकी पूर्ति अर्थ ही तो इसे आप लिवाये लिए जा रहे हैं। आप से आपको माँगने का सबब भी तो आप स्वयं ही बने थे। आप ने कहा था, 'मुझे पसंद करोगी तो कठिन होगा..' याद पड़ता है, आप मुझे कुछ कहने का प्रयास भी करने लगे थे परन्तु तभी आंतर की आवाज आई, "माँ, मैंने तो आप ही को चुन लिया है।"

जानती हूँ, यह तो इस अनजान निमानी के बोल थे.. जो सहज ही आपके प्रति प्रीत में निकल पड़े थे। मगर सच पूछिये तो आपने तो कमाल ही कर दिया.. मेरे में मेरी इस चाहत को ही तो सम्भालते आ रहे हैं आप.. आफ़रीन जाती हूँ आप पे माँ, पहले स्वयं ही चाह उठा दी इस पाषण हृदय में.. फिर उसी चाहत की चाह पूर्ति को आप स्वयं नवाज़ रहे हैं।

सच माँ, जिधर देखती हूँ उधर तू ही तू नज़री आता है। धन्य भाग्य मेरे, जो यूँ हर पल आप ही आपके दर्शन हो रहे हैं मुझे.. और यह जिज्ञासु मन आप ही आपको आपके हर पहलू में देख कर आत्मविभोर हो जाता है। धन्य हैं आप, जो इसे यूँ धन्य धन्य किये जा रहे हैं।

सच माँ, अतीत का हर पन्ना मेरा वर्तमान बन कर मुझे सदैव आपके क़रीब रखे रहता है.. इसके लिए बहुत शुक्रगुज़ार हूँ माँ आपकी! यही दुआ करती हूँ, यूँ ही आपके दीदार करते हुये आप ही की सेवा में रह पाऊँ। आप माँ प्रभु जी की चाकरी का सुख पाये रहूँ! आमीन

आप जानते हैं सभी.. आप ने यह भी जान लिया कि 'मैं कैसी हूँ..' सभी जान लेने के बाद.. अपने आप से अपनी मुलाकात के बाद, अपने आप में रहना बनता ही कहाँ है.. यह तो बड़ी मूर्खता होगी।

हे दीनानाथ दिनेश, यही आपसे मंगलयाचना करती हूँ कि आप माँ प्रभु जी के हज़ूर में रह सकूँ हमेशा।

हे माँ, आपने जो अढ़ाई अक्षर प्रेम के इसे पढ़ाये हैं न, बस, उसी प्रेम का वास्ता देते हुये आप ही से इल्तिजा करती हूँ, 'आप मुझे अपने में ले चलिये हे करुणाकर, जो आपसे कभी विमुख न होऊँ!' यही अनुनय-विनय व करबद्ध प्रार्थना है आपसे।'

ईश्वर करे, यह आंतर इस तरह कालिमा से निजात पा ले, जो इस मन मन्दिर में आप ही आप बैठ पायें.. आप ही आप स्थापित हो जायें!

हे मन, आ जीवन में विपरीत-अनुकूल दोनों से परे होने को चल..

आ, अपने रब के हर पहलू में चल..

सम्भल सम्भल कर चल..

प्रभु माँ की खिंची लकीरों में चलने का अभ्यास कर !

सत की सभी मर्यादाओं को देख कर चल, ज़माना तुम्हें हमेशा की तरह रास्ता देता रहेगा!

भगवान जी की रज़ा में चलने का अभ्यास कर.. जो जो भी मिले, उसे क़बूल करके चल। जो देते हैं भगवान देते हैं, जहान कुछ नहीं देता। इस लिए जो भी मिले, शिरोधार्य करके चल। अनथक मेहनत से चल। 'मैं' के जाल से निकल, प्रेम के बहाव में बह जा!

प्रेम को ही फैलने दे, जो कोई भी कहीं भी मलिनता का अंश न रहे.. सभी आंतर बाहर सुगन्धित हो जाये। माँ की ही महक आये। यूँ ही आंतर बाहर के सारे माहौल को उन्हीं के प्रेम की ताज़गी से भर ले.. यही सच्चे व सुच्चे हृदय से दुआ कर कि माँ ही माँ रह जायें। उन्हीं का सदक़ा उन्हीं माँ प्रभु जी में जी-जान से चल!

आ देख तो सही, कोई कैसे तेरे लिये चला है व चलता जा रहा है.. आ, तू भी बिन कुछ माँगे सेवादार की तरह चल.. यूँ ही अपने आपको एक दिन भूल पायेगी, अपने समेत अपना सभी न्योछावर करते हुये चल.. मन में कोई भी दुविधा रखकर न चल.. द्रष्टा बन कर चल!

जब तू कुछ बदल ही नहीं सकता तो फिर सारा effort इसी में लगा दे कि तुझे अपने मालिक के हज़ूर में ही रहना है। उन माँ प्रभु से मिली दिव्य देन को सम्भाल कर आंतर में श्रद्धा, भक्ति व प्रेम से चल..

तू जानती है तेरी अपनी कमाई कुछ भी नहीं जो तू दे सके.. इस लिए जो मिला है माँ आप से, उसी के प्रति पूर्णतया समर्पित भाव से चल पाऊँ.. यही असीस दीजिये माँ! गर अपना आप देते हुये चलना आ गया तो हे मन, तू मेरा सच्चा मददगार होगा.. मेरा सच्चा साथी होगा! सो आ, साथ निभाते हुये चल! तुम बहुत अच्छी तरह जान चुकी हो प्रभु जी की राह एक तरफा रास्ता है, सो उदासीनवत् चल.. मगर प्रभु प्रीत में चल!

माँ प्रभु जी से प्यार प्यार व प्यार ही तो पाया है, उसे बाँटते हुये चल! कृतज्ञता में चल व उनके हृदय में चल.. हे माँ, मुझे यूँ ही अपने में चला कर लिवा ले जाइये। यूँ ही धन्य धन्य हो जाऊँगी आपसे माँ! हरि ओइम्

तन कर्म करे चित्त राम मग्न

प्रस्तुति - विष्णु प्रिया महता

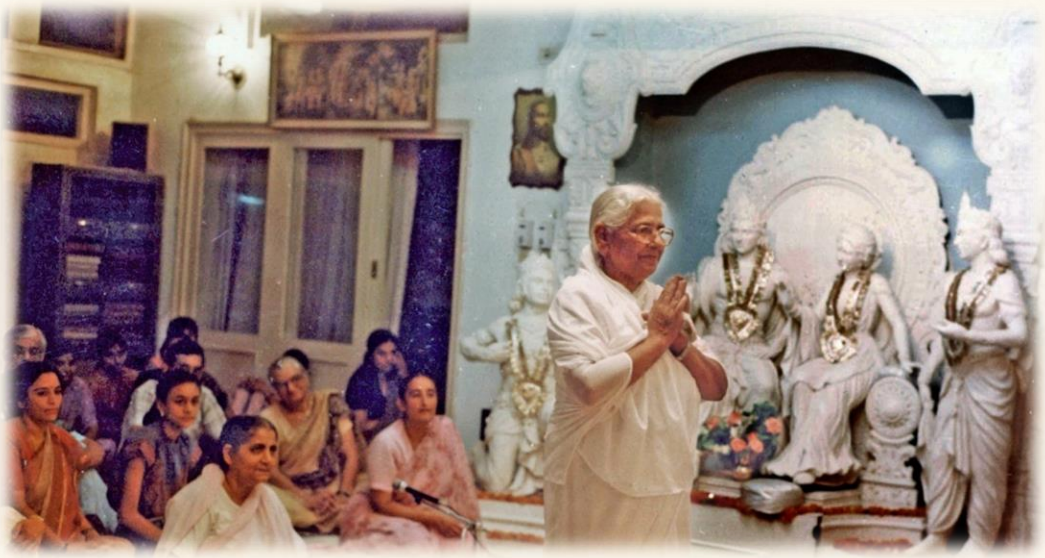

भक्त का तन तो संसार के सम्पूर्ण काज दक्षता से किये जाता है, परन्तु उसका चित्त निरन्तर राम चरण में निमग्न है, इसका प्रमाण हमें बार बार पूज्य माँ के जीवन में मिलता है। निम्नलिखित प्रवाह में उनकी इस तन्मयता और निरन्तर इस अलौकिक भाव में स्थिति की एक झलक मात्र मिलती है।

उन दिनों पंजाब विश्वविधालय की (खेल-कूद) महिला विभाग की निर्देशिका होने के साथ साथ पूज्य माँ अनेकों अन्य संस्थानों से भी जुड़े हुये थे.. किसी के प्रधान अथवा किसी अन्य के सचिव थे। इसी सम्बन्ध में इनके कार्यालय में अनेकों सभायें भी होती रहती थीं तथा विभिन्न संस्थाओं के सदस्य भी आते जाते रहते थे।

इनकी जीवन शैली में ऐसा अकस्मात् परिवर्तन भला किसे समझ आ सकता था? अपनी अपनी समझ और कल्पना के अनुरूप लोग उसका कारण जानने का प्रयत्न करते अथवा इन पर कोई न कोई दोष आरोपित करते रहते। परन्तु यह प्रतिरूप में केवल मुसकुरा देते और अपनी सफ़ाई में कुछ नहीं कहते।

एक दिन इनके कार्यालय में कार्य सम्बन्धी ऐसी ही एक सभा आयोजित थी और विभिन्न लोग आये हुए थे। इनका कार्यालय इनके घर में ही था तथा इनके निजी मन्दिर की दीवार उससे साँझी थी। उस दिन संयोगवश छोटे माँ भी घर पर ही थे और सदा की भाँति मन्दिर में बैठे पूज्य माँ के मुखारविन्द से प्रवाहित भावों को लिपिबद्ध कर रहे थे। सभा में हो रहा सारा वार्तालाप वह सुन सकते थे। उन्होंने सुना कि सभा के कुछ सदस्य पूज्य माँ की कार्यशैली पर मानो प्रश्न चिन्ह लगा रहे हैं।

छोटे माँ उनकी ऐसी बातें सुन कर मन ही मन विक्षिप्त हो रहे थे। ऐसी बातें किसी भी साधारण संसारी के लिये अपमानजनक प्रतीत होतीं और वह सब सुन कर अपने बचाव में भड़क कर बोल उठता। परन्तु इधर, पूज्य माँ, पूर्णतयः शान्त तथा सब आरोपों से अप्रभावित पूर्ण तर्क सहित उनके एक एक संशय का निवारण कर रहे थे। यह सुनकर छोटे माँ का मन उद्वेलित होने लगा कि माँ दूसरों के व्यर्थ आरोपों का ज़ोर से खण्डन क्यों नहीं करते? खैर सभा के अन्त तक सब सदस्य माँ की बातों से पूर्णतयः सहमत हो चुके थे और पूर्णतयः सन्तुष्ट होकर वापिस चले गये।

इस सब प्रक्रिया से पूर्णतयः अप्रभावित पूज्य माँ भगवान के चरणों में आकर पूर्ववत् अपने भाव उनके चरणों में धरने लगे।

उनको इस प्रकार पूर्णतयः निर्लिप्त देखकर छोटे माँ स्तब्ध रहे गये और पूछने लगे- 'उन लोगों ने आपके प्रति ऐसी अपमानजनक बातें कहीं और आप चुपचाप सुनते रहे?'

माँ उनकी बात सुन कर हैरान हुए, क्योंकि उनके चित्त में तो सभा की कोई बात अंकित ही नहीं हुई थी। कहने लगे, "नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं हुई! अच्छा, मैं ज़रा अपने notes खोल कर देखती हूँ.." जहाँ एक एक प्रश्न और उसका समाधान सब बहुत सुचारू ढंग से लिखा हुआ मिला।

हाथ सब लिख रहे थे, कान सुन रहे थे, वाणी बोल कर उत्तर भी दे रही थी, परन्तु चित्त में तो राम विराजे हैं इसलिये बाहर की कोई भी अवस्था अथवा परिस्थिति उन्हें क्योंकर छू पाती? इसी आन्तरिक अनुभव की झलक मिलती है हमें इस प्रवाह में-

मन में था राम का नाम सखी, लब स्वतः ही कहते जाते थे।
नाम निशान ही ना था मेरा, जो शब्द कहे बह जाते थे।।1।।

मैने कुछ भी कहा नहीं, प्रतिक्रिया ही मन में हो गई।
मन मेरा जा चरण पड़ा, लब से ही बातें हो गईं।।2।।

तू पूछे सखी अरी आज मुझे, बुरा लगा या भला लगा?
मैं तो वहाँ पर थी ही नहीं, किसे बुरा या भला लगा?3।।

किसने कहा किसको कहा, कैसे कोई कह गया।
कुछ नहीं कह सकूँ सखी, मैं तो वहाँ पे नाहिं था।।4।।

जो जो कहा उन्हें हमने, हमने कुछ भी कहा नहीं।
लब ने कहा तन ने कहा, मैं ने कुछ भी कहा नहीं।।5।।

उस पल जो मेरे भाव थे, उनको बयान न कर सकूँ।
जिसकी बतियां तुम कहती हो, वह कुछ भी ना अब समझ सकूँ।।6।।

मैं तो वहाँ **पे** थी ही नहीं, मैं ने कुछ भी कही नहीं।
लब ने बतियां की होंगी, मैं ने कुछ भी की ही नहीं।।7।।

तन नाते तन सम्पर्क सों, तन के सामने वह आई।
कहीं और बतियां सुनी तन ने, प्रतिकार ध्वनि निकल आई।।8।।

वह मेरी बतियां थी ही नहीं, मैं तो सखी कहीं और थी।
शब्द बहे यह मुख बोला, मानो मैं तो कहीं सखी और थी।।9।।

चित्त में बस एक राम है, हर पल राम का नाम है।
किसी को अब **रे** मैं क्या कहूँ, हर जा मेरा राम है।।0।।

जो भी हुआ इस तन ने किया, मेरा नाता कोई नहीं।
तन की गाथा यह है सखी, पर मेरी गाथा कोई नहीं।।11।।

21/7/1960

गृहस्थ आश्रम प्रवेश

दैवी आभूषण मौली में, इनका शृंगार गर होये।
लाल में पीत है रंग भरा, तत्व विस्तार तब होये।।1।।

दर्शन में हो रजोगुणी, मन पीत रंग संन्यासी होये।
अपने प्रति हो उदासीन, प्रेम सफल तब ही होये।।2।।

पितु लाज तोरा काजल हो, करुणा का सुरमा अब होये।
प्रेम की लाली चढ़ी रहे, शृंगार सफल तब तव होये।।3।।

मृदुल भाषी धृति क्षमा, कुल लाज स्मृति हिय होये।
मेधावी तव बुद्धि हो, आभूषित नन्हीं तब होये।।4।।

लाली के दर्शन होते हैं, जीवन अग्न रंगी होये।
बाह्य शृंगार लाख करो, मन वैरागी ही तव होये।।5।।

प्रेम समान कोई तप नहीं, ज्ञान महा पूजा होये।
है यही शृंगार यह आशीर्वाद, तोरा गुण शृंगार अमर होये।।6।।

- परम पूज्य माँ

परम पूज्य माँ

अर्पणा समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
मार्च 2025

अर्पणा आश्रम

अर्पणा में क्रिसमस उत्सव

" आध्यात्मिक ज्ञान में प्रबुद्ध व्यक्ति सभी धर्मों के प्रमुख सिद्धांतों को मानता है और सभी से प्रेम करने का निरन्तर अभ्यास करता है.."

अर्पणा मन्दिर में 25 दिसंबर को क्रिसमस उत्सव अत्यन्त उत्साह के साथ मनाया गया, जहाँ सम्पूर्ण अर्पणा परिवार एवं आगन्तुक प्रेम, शान्ति और एकजुटता की भावना के साथ एकत्रित हुए। सभी ने भक्तिपूर्ण प्रार्थनायें गाईं और सभी ने क्रिसमस कैरोल भी गाये। कार्यक्रम के अंत में परम पूज्य माँ द्वारा सुनाई गई 'Jesus Christ through the Eyes of a Non-Christian Devotee' की प्रस्तुति से कुछ महत्वपूर्ण अंश भी दिखाए गए।

मनदीप और कृपा द्वारा भक्ति भजन

ऑस्ट्रेलिया से आये अर्पणा आश्रम के बच्चे, मनदीप और कृपा ने अर्पणा मन्दिर में परम पूज्य माँ के स्वतः स्फुरित प्रवाह 'उर्वशी' से कुछ भजन गाकर सब के हृदयों को सम्मोहित कर दिया। उनके द्वारा तैयार की गई कुछ सुमधुर धुनों को सुन कर सभी के हृदय आनन्दित हो गए। पूज्य माँ की दिव्य वाणी ही कुछ ऐसी है.. जो जिज्ञासुओं को श्रद्धा और भक्तिरस से परिपूर्ण कर देती है।

विश्व पुस्तक मेला

नई दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में 1 से 9 फरवरी, 2025 तक, अर्पणा ट्रस्ट द्वारा परम पूज्य माँ की दिव्य वाणी में व्याख्या किये गये कुछ शास्त्र एवं उपनिषद् - श्रीमद्भगवद्गीता, ईशोपनिषद्, कठोपनिषद्, माण्डूक्य, केन व कई अन्य उपनिषद् एवं जपुजी साहिब आदि कई अन्य प्रकाशित पुस्तकें भी उपलब्ध थीं।

पूज्य माँ की वाणी जिज्ञासुओं को प्रेम, क्षमा एवं उदारता जैसे गुण अपने में लाने के लिये प्रेरित करती है। ये सब पुस्तकें, असंख्य पुस्तक प्रेमियों और जिज्ञासुओं के आकर्षण का केन्द्र रहीं।

अर्पणा अस्पताल

अर्पणा अस्पताल में वैस्कुलर विशेषज्ञ

30 नवंबर को, अर्पणा अस्पताल में प्रतिष्ठित वैस्कुलर सर्जन, डॉ. जैसोम चोपड़ा, एमबीबीएस, एफआरसीएस, एमएस (जनरल सर्जरी) द्वारा वैस्कुलर ओपीडी की शुरुआत की गई.. जिन्हें 40 वर्षों का अनुभव प्राप्त है। डॉ. चोपड़ा हर महीने के अंतिम शनिवार को अर्पणा अस्पताल में वैस्कुलर ओपीडी आयोजित करते हैं।

गर्भाशय ग्रीवा कैंसर जागरूकता और जाँच शिविर

अर्पणा अस्पताल ने हरियाणा के 3 गाँवों में जाँच शिविर आयोजित किए, जिसका नेतृत्व स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. अनुराधा (एमबीबीएस, डीएनबी) और उनकी टीम ने किया। स्वयं सहायता समूहों के 15 कार्यकर्ताओं ने महिलाओं को इस महत्वपूर्ण सेवा के विषय में जानकारी देने के लिए 3 दिनों तक घर-घर जाकर जाँच की। शिविर में 378 महिलाएं सम्मिलित हुईं। 154 स्त्रियों की जाँच की गई और 37 रोगियों को अर्पणा अस्पताल भेजा गया।

अर्पणा, आईडीआरएफ (अमेरिका), बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट (नई दिल्ली), श्री सुरेश मोतीराम शिवदासानी (ओमान) का अस्पताल के कार्यक्रमों में सहयोग देने के लिए हार्दिक आभार।

हरियाणा के हरे भरे गाँव

अर्पणा ने मनाया विश्व विकलांगता दिवस

5 जनवरी, 2025 को अर्पणा ने बुढाखेड़ा गाँव में विश्व विकलांगता दिवस मनाया। कार्यक्रम में ऑर्बिस फाइनेंशियल कॉर्पोरेशन लिमिटेड से श्रीमती संध्या थडानी और दीन दयाल उपाध्याय सैटेलाइट सेंटर के डॉ. राहुल सिंह और उनकी टीम उपस्थित थे।

800 से अधिक दिव्यांग व्यक्तियों ने दौड़, कबड्डी, मेहंदी, रंगोली, पेंटिंग, पेपर बैग बनाने और नृत्य जैसी कई गतिविधियों के साथ कार्यक्रम का आनंद लिया। एक जीवंत नाटक द्वारा डीपीओ में सम्मिलित होने के बाद दिव्यांग व्यक्तियों के जीवन में आए परिवर्तन को दर्शाया गया।

अर्पणा के विकास कार्यक्रमों को नई गति

फरवरी में, भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (आईडीबीआई) द्वारा अर्पणा के विकास कार्यक्रमों को उनके लक्षित क्षेत्र के 108 गाँवों में सहायता करने के लिए सात सीटों वाली 'बोलेरो' गाड़ी दान में दी गई। यह योगदान हमारे साथ काम करने वाले ग्रामीण समुदायों की सेवा करने की हमारी क्षमता को महत्वपूर्ण ढंग से बढ़ाने में सहायक होगा।

अर्पणा, हरियाणा में अपने विकास कार्यक्रमों के लिए ऑर्बिस फाइनेंशियल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (गुरुग्राम), बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट (नई दिल्ली) और आईडीबीआई बैंक लिमिटेड (मुंबई) से समर्थन प्राप्त करने के लिए अत्यन्त आभारी है।

दिल्ली शिक्षा कार्यक्रम

अर्पणा की पूर्व छात्रा ने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व किया!

नई दिल्ली के मोलरबंद में अर्पणा एजुकेशन सेंटर की पूर्व छात्रा, निधि ने अक्तूबर 2024 में बैंकॉक में 'गर्ल्स गो ग्रीन एशिया-पैसिफिक समिट' में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1,200 आवेदकों में से चुनी गई निधि एकमात्र भारतीय फेलो थीं, जिन्हें युवाह इंडिया और यूनिसेफ का समर्थन प्राप्त था।

अर्पणा पूर्व छात्रा, निधि (मध्य में)

शिखर सम्मेलन में निधि ने जलवायु परिवर्तन, हरित कौशल और क्षेत्रीय चुनौतियों पर बहुमूल्य जानकारी प्राप्त की। उन्होंने जलवायु अधिवक्ता के रूप में अपने अनुभव भी बताये और अब वह जागरूकता, सफाई, वृक्षारोपण और युवा जुड़ाव को बढ़ावा देने वाली शहरी कृषि परियोजना का नेतृत्व करेंगी।

कौशल विकास पाठ्यक्रमों पर 'हल्दीराम' सीएसआर कार्यशाला

21 नवंबर, 2024 को, 'हल्दीराम' सीएसआर टीम ने एक प्रस्तुति के लिए मोलरबंद का दौरा किया।

सुश्री कश्यपी पुरी ने प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 4.0 के तहत पाठ्यक्रमों के बारे में जानकारी साझा की, जिसमें छात्रों के लिए 100% प्लेसमेंट की पेशकश की गई है। प्रशिक्षुओं को 'हल्दीराम कौशल अकादमी' में एक सप्ताह और फैक्ट्री में तीन सप्ताह का प्रशिक्षण मिलता है।

वसंत विहार के 'रिजॉयस' में अर्पणा का 'ज्ञान आरंभ' शिक्षा कार्यक्रम

शैक्षणिक: दिसंबर में शिक्षकों ने कमज़ोर छात्रों की पहचान की और उन्हें उनके शैक्षणिक स्तर को सुधारने में मदद की। फिर, सभी छात्रों ने अपने पाठों (lessons) को तब तक दोहराया जब तक कि वे परीक्षाओं के लिए अच्छी तरह से तैयार नहीं हो गए।

पोषण: पोषण विशेषज्ञ, डॉ. रेशमा आनंद ने स्वास्थ्य समस्याओं वाले बच्चों के माता-पिता से मिलने के लिए केंद्र का दौरा किया। उन्होंने प्रत्येक माता-पिता से व्यक्तिगत रूप से बातचीत की और उन्हें पोषण पर ध्यान केंद्रित करके और उनके आहार में मामूली बदलाव करके अपने बच्चों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए मार्गदर्शन किया।

अर्पणा द्वारा केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रन (यूएसए), एस्सेल सोशल वेलफेयर फाउंडेशन (नई दिल्ली), अर्पणा कनाडा, एवीवा लाइफ इंश्योरेंस (गुरुग्राम), दिल्ली आयरन एंड स्टील कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (गाज़ियाबाद), जे आर सूद एंड कंपनी (नई दिल्ली) शिक्षा के लिए मिले सहयोग के लिए अत्यन्त आभार।

हिमाचल प्रदेश कार्यक्रम

हिमाचल में खेती में लाभप्रदता बढ़ाने के लिए कार्यशालाएँ

सब्ज़ी उत्पादन: दिसंबर 2024 में, अर्पणा ने महिला किसानों को सब्ज़ियाँ उगाने के बारे में जानकारी देने के लिए दो कार्यशालाएँ आयोजित कीं, जो पारंपरिक मक्का उगाने से अधिक लाभदायक हैं। 54 लांगा गाँव में और 55 अर्पणा के गजनोई केंद्र में- कुल 99 महिलाओं ने इसमें भाग लिया।

बागवानी: बेहतर आय के लिए बागवानी कौशल को बढ़ाने के लिए, रावी घाटी एफपीओ की 60 महिलाओं ने 17 दिसंबर को जतकारी के लांगा गाँव में एक कार्यशाला में भाग लिया। 20 दिसंबर को दूसरी कार्यशाला में, गजनोई किसान उत्पादक संगठन के साथ-साथ अर्पणा स्वयं सहायता समूहों की 64 महिलाओं ने गजनोई के अर्पणा केंद्र में भाग लिया।

कृषि विज्ञान केंद्र, सरू के बागवानी विशेषज्ञों ने सभी 124 महिलाओं को फलों के पेड़ों और पौधों की देखभाल और पोषण के बारे में जानकारी दी। 2024 में 2,500 निःशुल्क सेब के पेड़ प्राप्त करने वाली और लगाने वाली महिलाओं से फीडबैक एकत्रित किया गया।

निःशुल्क सेब के पेड़ प्राप्त करने के लिए नए इच्छुक प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के लिए पंजीकरण कराया।

अर्पणा, हिमाचल कार्यक्रमों के लिए श्री रविंदर बहल (नई दिल्ली) और बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट (नई दिल्ली) के सहयोग के लिए बहुत आभारी है।

LET'S EMPOWER VULNERABLE WOMEN AND CHILDREN AS THEY REACH FOR THEIR DREAMS!

ARPANA TRUST

EDUCATION FOR DISADVANTAGED CHILDREN

- Tuition support for classes 1-12 pre-school Classes for toddlers, cultural activities.
- Vocational training classes.

HUMANE VALUES FOR AN EQUITABLE SOCIETY

- Dramas, Publication, Satsangs
- Charitable grants for the vulnerable
- Health/Socio economic assistance

DONATE ONLINE

ARPANA RESEARCH & CHARITIES TRUST

PROVIDES MODERN HEALTH CARE THROUGH

- Arpana Hospital for free /affordable health care.
- Arpana Medical centre, Himachal

EMPOWERING WOMEN

- Self Help Group & SHG Federations.
- Micro – Credit, Income generation, community development

EMPOWERING THE DIFFERENTLY ABLED

- Differently Abled Persons Organizations for health, assistive devices, certifications and income generation.

DONATE ONLINE

DONATIONS TO ARPANA ARE 50% TAX EXEMPT UNDER SECTION 80G, INCOME TAX ACT 1961

Cheques in favour of Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust to be sent to:
Information & Resources Department
Arpana, Madhuban, Karnal- 132037, Haryana

Donations through Direct Bank Remittance:
Bank of India, Karnal (IFSC Code: BKID0006750)
Arpana Research & Charities Trust; Bank Account No. 675010100100014,
Arpana Trust Bank Account No. 675010100100001

FOREIGN DONATIONS TO ARPANA ARE 100% TAX EXEMPT WHEN SENT THROUGH:

Arpana Canada
Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton,
Ontario L6Y 359 Canada
Email: suebhanot@rogers.com

India Development & Relief Fund (IDRF)
Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive,
North Bethesda, MD 20852 USA
E mail: vinod@idrf.org

Contact Us:
Harishwar Dayal, Executive Director +91 98186 00644
Email us: arct@arpana.org | at@arpana.org

Aruna Dayal, Director Development +91 99916 87310
Websites www.arpana.org www.arpanaservices.org